वर्ष-१३ अंक १२
२७ अगस्त २०१७

पंजीयन संख्या म.प्र. भोपाल 32/2015-17
एक प्रति २०.०० रु.

ओ३म्

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

एक दृष्टि में आर्य समाज

- आर्य समाज की मान्यता का आधार सत्य सनातन वैदिक धर्म है।
- सनातन वह है जो सदा से था, सदा रहेगा। सत्य सनातन धर्म का आधार वेद है।
- वेद ज्ञान का मूल परमात्मा है।
- यही सृष्टि के प्रारंभ का सबसे पहला ज्ञान, पहली संस्कृति और समस्त सत्य विद्याओं से पूर्ण है।
- वेद ज्ञान किसी जाति, वर्ण, सम्प्रदाय या किसी महापुरुष के ज्ञान के अनुसार नहीं है और न ही किसी समय व स्थान की सीमा में बन्धा है।
- परमात्मा की कल्याणी वाणी वेद समस्त प्राणियों के लिए और सदा के लिए हैं।
- इसे पढ़ना-पढ़ाना श्रेष्ठ (आर्य) जनों का परम धर्म है।
- ईश्वर को सभी मानते हैं इसलिए विश्व शान्ति इसी ईश्वरीय ज्ञान वेद से संभव है।
- आर्य समाज-अविद्या, कुरीतियों, पाखण्ड व जाति प्रथा जैसी सामाजिक बुराईयों को दूर करने वाला तथा सत्य ज्ञान व सनातन संस्कृति का प्रचारक है।

ओ३म्

वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-१३ अंक-१२

२७ अगस्त २०१७
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३११६
विक्रम संवत् २०७४
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	राष्ट्र के साथ हमारा व्यवहार औपचारिकता है	४
२.	आर्य समाज से हिन्दुओं को दूर करने में लगे हैं	६
३.	इन्द्रियों को वश में रखने की विधि	११
४.	मृतक श्राद्ध तर्पण	१२
५.	सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण की सात विशेषताएँ	१८
६.	क्या है जिन्दगी	२१
७.	नवीन आर्य समाज की स्थापना	२२
८.	आर्य समाज ग्राम हरनावदा में श्रावणी पर्व	२४
९.	प्रान्त में वेद प्रचार की धूम	२५
१०.	अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा	२६

सितंबर माह के पर्व त्यौहार एवं जयंती

■ गुरू ग्रंथ साहिब प्रकाश दिवस	१
■ शिक्षक दिवस, डॉ. राधाकृष्ण जयंती, अनंत चतुर्दशी	५
■ विश्व साक्षरता दिवस	८
■ आचार्य विनोबा भावे जयंती	११
■ हिन्दी दिवस	१४
■ इंजीनियर्स डे, ई. विश्वेश्वरैया जयंती	१५
■ रघुनाथ शाह बलिदान दिवस	१८
■ पितृमोक्ष अमावस्या	१९
■ शारदीय नवरात्र प्रारंभ	२१
■ पं.दीनदयाल उपाध्याय जयंती	२५
■ विश्व पर्यटन दिवस	२७
■ विश्व हृदय दिवस	२९
■ विजयादशमी, शनि पूजा	३०

सम्पादकीय –

राष्ट्र के साथ हमारा व्यवहार ओपचारिकता है या यथार्त

15 अगस्त स्वतन्त्रता दिवस के रूप में पूरे देश में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। यह देश के नागरिक ने अपने शहर में, जिले में प्रत्यक्षदर्शी के रूप में देखा तथा टी. वी. और समाचार पत्र के माध्यम से जाना। एक दिन नहीं अपितु प्रायः आधे दिन तक इस दिवस को बड़ी गर्म जोशी के साथ मनाया। जिसमें रैलियां, तिरंगे झण्डे शासकीय संस्थानों, विद्यालयों, मकानों और वाहनों पर लगाकर 15 अगस्त अमर रहे के नारों से यह त्यौहार मनाने का सिलसिला चल रहा है। प्रायः इन कार्यों के लिए ही 1–2 दिन पहले से तैयारियां होती हैं। राष्ट्रीय गीतों का प्रसारण, नेताओं का भाषण आदि–आदि 15 अगस्त त्यौहार मनाने का एक निश्चत प्रारूप सा बन गया है। यह कहीं कम, कहीं अधिक और कहीं सामान्य रूप में परिलक्षित होता है।

भारतवर्ष पर्वों का देश है, इसमें कुछ पर्व लम्बे समय तक मनाये जाते हैं और कुछ पर्व एक दिन अथवा कुछ घण्टों में मनाकर उसको भूल जाते हैं। जैसे मार्यादा पुरूषोत्तम श्री रामचन्द्र, योगीराज श्रीकृष्णचन्द्र अथवा किसी महापुरूष के जन्म दिवस को मनाकर ठीक अगले वर्ष आने वाली उस तिथी के 1–2 दिन पूर्व ही याद करते हैं। वैसा ही व्यवहार 15 अगस्त और 26 जनवरी के साथ भी हो गया है। इंसमें भी दर्शन गौण और प्रदर्शन प्रमुख हो गया है। इस प्रकार वर्ष में केवल 1 दिन लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण स्वतन्त्रता दिवस को भी हमने ओपचारिकताओं का लिबास पहनाकर उसे मनाना अपना धर्म या नैतिक कर्तव्य मान लिया है, किन्तु यह सही नहीं है।

ऐसा करना स्वतन्त्रता के लिए भोगी गई यातनाओं और बलिदानों की स्पष्ट उपेक्षा है। मात्र ओपचारिकता इस अनमोल तोहफे का सही मूल्यांकन नहीं है।

इसके महत्व पर गंभीर चिन्तन नहीं है। इसलिए इस दिन को जिस प्रकार मनाना चाहिए, जिस कारण मनाना चाहिए वह भावना नहीं दिखाई देती। जो इस दिन से प्रेरणा और इस आजादी की निरन्तरता बनी रहे, इस सन्दर्भ में कोई विचार, कोई संकल्प नहीं लिया जाता है।

सही अर्थों में स्वतन्त्रता दिवस मनाने के लिए उन स्वतन्त्रता संग्राम सैनानियों को दी जाने वाली अमानवीय घोर यातनाओं पर विचार करना चाहिए, उन अमर शहीदों के जज्बात को, उनके त्याग को कभी समय निकालकर पढ़ना, सुनना, सुनाना और समझना चाहिए। खुदीराम बोस जिसने किशोरावस्था ही पार की थी, अपनी जिन्दगी के 18 वर्ष और कुछ माह ही जिन्दगी के जिए थे। भगतसिंह,

चन्द्रशेखर आजाद, पं. रामप्रसाद बिस्मिल जिन्होंने जवानी की दहलीज पर कदम रखा था, ऐसे न जाने कितने जाने अंजाने वीरों ने यह आजादी हमें अपने प्राणों का मूल्य चुकाकर दी है। अंग्रेजी सत्ता के समय में ऐसा नहीं था कि समाज जी नहीं रहा था, रोटी–कपड़ा–मकान की उनको व्यवस्था नहीं थी। किन्तु भारतमाता पर एक कलंक था परतन्त्रता का उस कलंक को हटाकर अपनी सभ्यता, संस्कृति के अनुसार स्वराज्य और सुराज्य बनाने की कल्पना ने स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया था। उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि जिस स्वतन्त्रत देश की उन्होंने कल्पना की है उस स्वतन्त्रता को वे भी भोग सकेंगे या नहीं। इस प्रकार निज स्वार्थ का उनके मन में कतई कोई भाव नहीं था। किन्तु आज उनके प्रयासों और बलिदानों का इस देशवासियों ने क्या हश्र किया। निज स्वार्थ में देश को बरबादी के कगार पर खड़ा कर दिया। संस्कृति, सुरक्षा संवेदनशीलता पर कुठाराघात निज स्वार्थों के लिए करना प्रारंभ कर दिया। स्वराज्य और सुराज्य की कल्पना जो उन शहीदों की थी, उसे कुचल दिया।

जबकि यह 15 अगस्त एक अवसर होता है, जब देश के लिए अतीत के प्रयासों से स्वतन्त्रता के लिए लड़ने वालों ने जो यातनाएं भोगी, सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उन पर चिन्तन और वर्तमान स्थिति में हम क्या कर सकते हैं, क्या कर रहे हैं, उसमें और सुधार तथा भविष्य की सुरक्षा पर चिन्तन, मनन और संकल्प लेना चाहिये। हम बड़े शान से कहते तो हैं कि **"शहीदों की चिताओं पर लगेंगें हर बरस मेले, वतन पर मिटने वालों का यही बाकी निशां होगा।"**

लेकिन यह केवल जिव्हा तक और लोगों को आकर्षित करने के लिए है। यह शहीदों का सच्चा, सही सत्कार नहीं है, यह तो मन वचन कर्म से होना चाहिए। क्योंकि **"राष्ट्र प्राणों से बड़ा होता है, हम मिटते हैं तो राष्ट्र खड़ा होता है।"**

आईये एक संकल्प दिवस के रूप में सच्चे भारतवर्ष के नागरिक होने के नाते जीवन के अन्य कार्यों के साथ कार्य करते हुए उसमें से कुछ समय अपने राष्ट्र और बलिदानियों का सम्मान राष्ट्रीय भावना से जीवन को संवारे और एक सच्चे नागरिक होने का गौरव प्राप्त करें।

यही 15 अगस्त मनाने की सार्थकता है।

> प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
>
> **– आर्य समाज**

आर्य समाज से हिन्दुओं को दूर करने में लगे हैं – स्वामी अग्निवेश

मस्लिम अवामी कमेटी ओरंगाबाद महाराष्ट्र द्वारा एक सभा में श्री अग्निवेश ने कहा –

0 देश में रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा, यदि मुझसे कोई कहे तो मैं वन्दे मातरम् नहीं कहूँगा।

0 यदि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के पहले मन्दिर की कोशिश की तो सबसे पहले मैं विरोध करूँगा।

0 चोटी, दाड़ी के नाम पर आदित्यनाथ योगी, सारे योगी और भोगी देश को बॉट रहे हैं।

0 यदि राम मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई तो तुलसी, शिवाजी, दयानन्द, विवेकानन्द ने क्यों नहीं इसका उल्लेख किया ?

0 क्या राम के जन्म के समय उनका जन्म आड़वानी देख रहे थे ?

0 वन्दे मातरम् के संबंध में हाई कोर्ट जजों की वन्दे मातरम् की टिप्पणी पर भी व्यंग्य किया।

हमारे आर्य समाज के सन्यासी सनातन धर्म की रक्षा, उसका विस्तार और साम्प्रदायिक विचारधारा की अज्ञानता से समाज की रक्षा करने में लगे रहे और आज भी कुछ लगे हैं। धर्मान्तरण से हिन्दू समाज की रक्षा और सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार मुख्य रूप से उनका उद्देश्य रहा हैं। सनातन धर्म से विमुख हुए व्यक्तियों की शुद्धि करके उन्हें पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित करना और नव आगन्तुक अन्य सम्प्रदाय के व्यक्तियों को भी जोड़ना यह कार्य भी हमारे सन्यासी वृन्दों के माध्यम से होते रहे हैं।

जब–जब सनातन धर्म विरोधी आवाज कहीं से उठी आर्य समाज सदा आगे बढ़ा और उनकी रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी दी। स्वतन्त्रता के पूर्व देश की राजनीति के क्षितिज पर पहचान बनाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण के विरोध में और हिन्दू पिछड़े वर्ग की सुरक्षा के लिए उठाए कदमों का सर्वप्रथम प्रस्ताव अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन में रखा था। किन्तु महात्मा गांधी, पं. मोतीलाल नेहरू से भी अधिक जन जन में प्रसिद्धी के सम्मान को हिन्दू समाज की रक्षा के लिंए त्याग दिया, अपनी व्यक्तिगत मान–सम्मान की भावना को महत्व नहीं दिया, समाज व धर्म को आगे रखा।

अनेक सन्यासी मजहबी कट्टरता के विरूद्ध कार्य करते हुए बलिदानी हो गए। इसी कारण समस्त हिन्दू समाज आर्य समाज को अपना रक्षक, हितैषी मानता रहा। ऐसे अनेक वीतराग सन्यासियों निज स्वार्थ को कभी निकट नहीं आने दिया संगठन के लिए जिए, संगठन के लिए कुर्बानियां देते रहे, संगठन का निज स्वार्थ में उपयोग नहीं किया।

किन्तु आज इसके विपरीत राजनीति में लिप्त और लोकेष्णा में पूरी तरह डूबे श्री अग्निवेश आर्य समाज की छबि बिगाड़ने में लगे हैं। कितनी ही बार अपने कार्य कलापों और सस्ती लोकप्रियता के वशीभूत उनके द्वारा दिए गए हिन्दू विचारधारा के विरूद्ध विवादास्पद भाषणों के कारण आर्य समाज संगठन को हिन्दू समाज का आक्रोश और उपेक्षा सहन करना पड़ी, बाद में सफाई देना पड़ी। इस प्रकार आर्य समाज से हिन्दू समाज की दूरियां बढ़ाने की हरकतें करते रहे।

आज तक कुरान पर या इस्लाम या क्रिश्चियन सम्प्रदाय द्वारा हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन पर, चार निकाह पर, जेहाद, हज जैसी किसी बात पर अपनी जबान नहीं खोली। किन्तु हिन्दुओं के देवी देवताओं, पूजा स्थलों, त्यौहारों पर टीका टिप्पणी करते हुए अनेकों बार हिन्दूओं की भावनाओं के विपरीत अपने उद्‌गार व्यक्त किए। इससे सनातन धर्म की विरोधी साम्प्रदायिक ताकतों को संबंल मिला और हिन्दुओं में आर्य समाज के प्रति आक्रोश भाव आये। सत्यार्थ प्रकाश, वेद, राम मन्दिर, अमरनाथ यात्रा, समलैंगिगता, नक्सलवादियों के प्रति प्रोत्साहन देते हुए डिबेट ऐसे कई बार आर्य समाज की मान्यता के विरूद्ध बोलते रहे। कुछ साल पूर्व जम्मू कश्मीर के समस्त हिन्दू एक लम्बी लड़ाई साम्प्रदायिकता के विरूद्ध लड़ रहे थे, उस समय श्री अग्निवेश ने हिन्दू विचारधारा के विरूद्ध साम्प्रदायिक संगठनों की पीठ थप थपाई। इस कारण हिन्दू आर्य समाज के प्रति घृणा भाव रखने लगे। जम्मु के आर्य समाजियों के सामने बड़ा संकट आ गया, उन्होंने तत्काल वहां की स्थिति बताते हुए सभा से किसी को आने का कहा तब सार्वदेशिक सभा की ओर से जाकर मीडिया में श्री अग्निवेश की बातों का खण्डन कर हिन्दू संगठन के सहयोग की बात कही। मुस्लिमों की सुरक्षा, ईसाईयों की सुरक्षा की वकालात और राष्ट्र विरोधी कार्यों में लिप्त जे. एन. यू. का समर्थन श्री अग्निवेश द्वारा अपनी लोकप्रियता बढ़ाने की भावना से किया। स्वामी रामदेव व अन्ना हजारे के आन्दोलन में उनके मंच पर बैठकर उन्हीं के विरूद्ध कार्य किया, अन्ना के विरूद्ध मंच के पीछे से ही मोबाईल पर कांग्रेस के एक बड़े नेता से अन्ना के विरूद्ध फोन पर चर्चा करते हुए टी. वी. पर लाखों ने देखा और भर्त्सना की। पंजाब में अपनी वाहवाही के लिए सारी हदें तोड़ते हुए वहां जाकर सत्यार्थ प्रकाश में से कुछ भाग निरस्त करने की बात कही।

आज तक सैकड़ों हिन्दुओं के धार्मिक स्थलों के संबंध में, काश्मीर से कनेरा, यू. पी., हरियाणा के पलायन कर चुके लाखों हिन्दुओं के लिए या जबरन सनातन धर्मियों के धर्म परिवर्तन करवाने की घटना के संबंध में कभी श्री अग्निवेश ने कुछ नहीं कहा। हिन्दुओं पर अत्याचार पर होते हैं तब कभी कुछ नहीं कहा क्योंकि सत्ताधारी या संगठन विशेष के पक्ष को प्रसन्न रखना महत्वपूर्ण था। गौ हत्यारों के पक्ष में हिन्दुओं पर निशाना साधा गया, किन्तु कभी गौ हत्या करने वालों के विरोध में एक शब्द नहीं कहा गया कि वे क्यों गौ हत्या करते हैं यह गलत है इसका विरोध कभी विरोध नहीं किया।

आर्य समाज के भले ही सैद्धान्तिक कुछ दूरियॉ हिन्दू सनातन धर्मियों से रही हों किन्तु सहयोग के लिए हमेशा आर्य समाज तैयार रहा। मिनाक्षीपुरम् में मन्दिर के अस्तित्व को साम्प्रदायिक विचारधारा वालों ने नष्ट कर दिया था। तात्कालीन सभा प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पुनः वहां मन्दिर स्थापित करवाया। राम मन्दिर के संबंध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के द्वारा तात्कालीन प्रधान श्री कैप्टन देवरत्नजी आर्य थे, उस समय एक सार्वदेशिक सभा सदस्यों के अतिरिक्त विशिष्ट **आमन्त्रित विद्वानों की अन्तरंग सभा में राम जन्म भूमि के आन्दोलन को सहयोग देने का निर्णय सर्वानुमति से लिया था।**

किन्तु इसके विरूद्ध दिनांक 28 / 07 / 2017 को महाराष्ट्र **मुस्लिम अवामी कमेटी ओरंगाबाद महाराष्ट्र द्वारा** एक सभा में राम मन्दिर और राम जन्म भूमि को लेकर एक बेहद निम्न स्तर की हास्यास्पद टिप्पणी श्री अग्निवेश ने हजारों मुस्लिम समुदायों के व्यक्तियों के बीच की। जिसे तमाम श्रोता जो मुस्लिम समाज के ही थे बड़ी जोर से तालियां बजाकर हंसते हुए राम जन्म स्थल का मजाक उड़ाया।

भारत के वरिष्ठ एवं राष्ट्रीय स्तर मे सम्मानित जन प्रतिनिधि नेता श्री आडवानी पर भी हास्या स्पद टिप्पणी की, जिसका समस्त श्रोता जो मुस्लिम ही थे उन्होंने मजाक उड़ाया, तालियां बजाई।

अपने भाषण में श्री अग्निवेश ने राम जन्म स्थल पर प्रश्न चिन्ह लगाते हुए उनके जन्म के संबंध में जो भद्दी टिप्पणी की वह असहनीय व शर्मनाक है। वे कहते हैं राम का जन्म कब हुआ था किसको मालूम है, क्या प्रमाण है कि यहीं राम जन्म हुआ **जहां से नमाज पढ़ी जाती थी। पुनः कहते है जहां राम का जन्म हो रहा था, क्या उस समय अडवानी (ऑखों पर हाथ रख चश्में या दूरबीन से देखने का अभिनय करते हुए बताया) देख रहे थे ? आगे कहा यदि 1845 में राम मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनाई यदि यह सही है तो तुलसी, शिवाजी, दयानन्द, विवेकानन्द ने क्यों नहीं लिखा ?**

आगे कहा, ये बोलते हैं सौगन्ध राम की खाते हैं हम मन्दिर वहीं बनायेगें। **ये हिन्दुओं की गन्दी सियासत है, मुल्क तोड़ने व बांटने की गन्दी सियासत है, हम इसे स्वीकार नहीं करते।**

इस प्रकार देश विदेश के, करोड़ों हिन्दू समाज के राम से आस्था रखने वाले व्यक्तियों की भावना का खुला मजाक मुस्लिम समाज द्वारा आयोजित एक बड़ी सभा में श्री अग्निवेश द्वारा किया गया।

देश में रहना है तो वन्दे मातरम् कहना होगा, यदि ऐसा हो तो मैं वन्दे मातरम् नहीं कहूँगा। हाई कोर्ट द्वारा वन्दे मातरम् पर दिए आदेश की टिप्पणी करते हुए कहा ये जजों को कहॉ से सपना आ गया, उन्हें फैसले करना चाहिए। अपने भाषण में महाराष्ट्र के एक मुस्लिम विधायक द्वारा वन्दे मातरम् न कहने पर विवाद, हो रहा है, विधायक पद निरस्त करने की मॉग राष्ट्रवादी विचारधारा के व्यक्ति कर रहे हैं। किन्तु श्री अग्निवेश ने अपने भाषण में कहा जबरजस्ती कोई किसी को या यदि न्यायालय भी जबरन मुझसे वन्दे मातरम् कहने का कहे तो मैं उसे कभी नहीं मानूँगा।

आप सोच सकते हैं कि ऐसा भाषण दिया जाना खुले रूप में राष्ट्रीयता का अपमान और साम्प्रदायिकता को किस तरह से बढ़ावा देने वाला है। (जो सज्जन इन बातों की पुष्टि करना चाहें वे बीडियो से देख सकते हैं)

इस प्रकार मुस्लिम समाज द्वारा आयोजित सभा में जाकर हिन्दुओं की भावना के और राष्ट्रीय विचारधारा के विरूद्ध जब एक अपने को सन्यासी कहने वाला व्यक्ति वह भी अपने को आर्य समाजी कहे तो आर्य समाज के बारे में आम हिन्दू क्या सोचेगा ? इस प्रकार के प्रयास से तो हिन्दू आर्य समाज से और दूरी बना लेगा, यह विष वमन और साम्प्रदायिक ताकतों का सहयोगी होगा, यह प्रयास श्री अग्निवेश कर रहे हैं। इस संबंध में ओरंगाबाद के तमाम हिन्दू संगठनों में रोष है और आर्य समाज के व्यक्ति किसी तरह उन्हें शान्त व आश्वस्त कर रहे हैं। सन्यासी के कर्तव्यों की अव्हेलना कर और एक सन्यासी का चरित्र अपनाए बिना मात्र भगवा वस्त्र धारण कर और सत्तारूढ़ सरकार के संवरक्षण से जीने वाला कोई भी जीवन सन्यासी के रूप में स्वीकार योग्य नहीं हो सकता।

अपने जीवन में वेद प्रचार, यज्ञ, संगठन शक्ति, शुद्धि, गुरूकुल का विस्तार, धर्म रक्षा का कभी कोई प्रयास नहीं किया। गौ रक्षा, सनातन संस्कृति से दूर प्राय: अनेक राजनैतिक दलों की सदस्यता समय समय पर बदलना एक सन्यासी का आचरण नहीं है। छत्तीसगढ़ में जे. डी. यू. के गठबन्धन की सरकार है। **सुना है अभी अभी फिर श्री अग्निवेश ने जे. डी. यू. की सदस्यता ग्रहण की है।** क्या एक सन्यासी का यही चरित्र होना चाहिए। आर्य समाज के कोई कार्य शेष नहीं है, कोई काम अब वेद प्रचार का नहीं बचा।

अपनी ऐसी ही येषणाओं के कारण श्री अग्निवेश द्वारा आर्य समाज के संगठन को भी नहीं छोड़ा। सार्वदेशिक सभा दिल्ली कार्यालय पर बलात अवैधानिक खुली दादागिरी से कब्जा कर तात्कालीन शासन प्रशासन के सहयोग से जो क्षति पहुंचाई वह अपूरणीय व अकथनीय है। राजनैतिक पार्टियों जैसा भाड़यन्त्र और विचारधारा के वशीभूत संगठन को तोड़ने का कार्य किया। स्वनिर्मित तथाकथित पद पर वे चाहे जब आ जाते हैं, या चाहे जब किसी और को आगे करके अपनी योजना चलाते रहे। जब पूरे देश के आर्यों ने नकार दिया तो फिर पीछे हटकर किसी को आगे कर दिया, यह एक सोची समझी योजना के अन्तर्गत चल रहा है।

मेरे आर्य बन्धुओं, **आर्य समाज की स्थिति हमसे छिपी नहीं है उसका कारण है हम ऋषि को मानते है पर बातों तक सच्चे मन से उसकी नहीं मानते,** उसका चित्र लगाते हैं, संस्थाओं के नाम भी रखते हैं, नाम का जयकारा भी लगाते हैं। यह सब पौराणिकों के समान चित्र पूजा और चरित्र उपेक्षा के समान हो रहा है। ऋषि के जीवन में सत्य ही था निर्भिकता थी किन्तु हम उसके अनुयायी उसके विपरीत सही को सही कहना भूल गए, सत्य और असत्य को समान दर्जा भी हम कहीं कहीं औपचारिकता और व्यवहारों की मधुरता को सामने रखकर दे रहे हैं। त्यागी व लोभी को, स्वार्थी और परमार्थी को, एक ही तराजू में तौल रहे हैं। गलतियों को क्षमा करने की भूल पृथ्वीराज ने की थी, जिसका खामियाजा हम अब भुगत रहे हैं, किन्तु हम भी उसी को दोहरा रहे हैं। सत्य का त्याग व चापलूसी अथवा कपड़ों के रंगों से भ्रमित होते रहे तो अपने को आर्य कहना इस शब्द की गरिमा को नष्ट करता है। याद रहे चुप रहना सत्यता को नष्ट करता है।

समाज के लिए जो समर्पित हैं उनको स्थान देना हम सबका नैतिक कर्तव्य है। किन्तु जो संगठन के साथ खेल रहा हो, भ्रमित कर रहा हो, लोकेष्णा के कारण संगठन का अहित कर रहा हो उसको यदि नहीं समझा, उसको भी संगठन में स्थान देते रहे तो संगठन के लिए इससे बड़ा धोखा नहीं हो सकता है, हमारा नियम कहता है– **यथायोग्य वर्तना चाहिए,** यह महर्षि दयानन्द ने एक सन्देश दिया उसको ही मान लेवें तो संगठन की विकृति दूर हो जावेगी।

प्रकाश आर्य

सभामन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

बोधकथा –

इन्द्रियों को वश में रखने की विधि

स्वामी रामतीर्थ जब प्रोफेसर तीर्थराम थे, तब लाहौर के एक कॉलेज में पढ़ाते थे। वह रहते थे लुहारी दरवाजा में। कॉलेज से घर को आ रहे थे, तो लुहारी दरवाजे में उन्होंने एक व्यक्ति को टोकरी में रखकर नींबू बेचते हुए देखा। पीले रंग के रसभरे नींबू थे। मुख में पानी आ गया। जिव्हा ने कहा – क्रय कर लो, उनका स्वाद बहुत उत्तम है।

तीर्थराम थोड़ी देर रूके। फिर आगे बढ़ गये। आगे जाकर जिव्हा फिर मचली, उसने कहा – नींबू अच्छे तो थे, नींबू खाने में हानि क्या है ?

तीर्थराम उल्टे आये। नींबुओं को देखा। वास्तव में बहुत उत्तम थे। उन्हें देखकर फिर घर की ओर चल पड़े। थोड़ी दूर गये तो जिव्हा फिर चिल्ला उठी – नींबू का रस तो बहुत अच्छा है। नींबू तो खाने की चीज है। उसे खाने में पाप क्या है ?

तीर्थराम पुनः नींबूवाले के पास आ गये। दो नींबू मोल ले लिये। घर पहुंचे। देवी से कहा – चाकू लाओ। उसने चाकू लाकर रख दिया। तीर्थराम चाकू को नींबू के पास और दोनों को अपने समक्ष रखकर बैठ गये। बैठे रहे, देखते रहे। अन्दर से आवाज आई, इन्हें काटो, काटने में क्या हानि है ?

रामतीर्थ ने चाकू उठाया और एक नींबू को काट दिया। मुख में पानी भर आया। अन्दर से फिर प्रेरणा हुई, इसे चखकर तो देखो, इसका रस बहुत उत्तम है।

रामतीर्थ ने एक टुकड़े को उठा लिया, जिव्हा के समीप ले गये। नींबू को उसके साथ लगने नहीं दिया। अन्दर से किसी ने पुकारकर कहा – तू क्या इस जिव्हा का दास है ? जो यह जिव्हा कहेगी, वही करेगा ? जिव्हा तेरी है, तू जिव्हा का नहीं।

समीप खड़ी पत्नि ने कहा – यह क्या करते हो ? नींबू को लाये, इसे काटा, अब खाते क्यों नहीं ?

जिव्हा ने कहा – शीघ्रता करो। नींबू का स्वाद बहुत उत्तम है। रामतीर्थ शीघ्रता से उठे। कटे और बिना कटे हुए दोनों नींबुओं को उठाकर गली में फैंक दिया और प्रसन्नता से नाच बैठे – मैं जीत गया।

यह है इन्द्रियों को वश में करने की विधि।

एक चिन्तन -

मृतक श्राद्ध तर्पण

श्राद्ध और तर्पण करना ही चाहिए किन्तु किनका ?

– प्रकाश आर्य, महू

श्राद्ध व तर्पण तो करना ही चाहिए, यह एक अवश्य किए जाने वाला मानवीय कर्म है। किन्तु श्राद्ध किनका व कब किया जा सकता है यह सोच विचार आवश्यक है तभी उसका महत्व है।

जीवन अनेक मान्यताओं को मानते हुए बीत जाता है किन्तु उन मान्यताओं का मूल उद्देष्य क्या हैं, उसे क्यों मानते है, इसकी जानकारी अधिकांष व्यक्तियों को अन्तिम समय तक भी नहीं होती। पीपल, बड़, तुलसी, गाय इन्हें मात्र धार्मिक मान्यताओं के कारण ही इनकी पूजा की जाती है। किन्तु इसके पीछे जो कारण है उससे बहुत कम व्यक्ति परिचित हैं। वास्तव में उपरोक्त चारों की मान्यता का मुख्य कारण उनसे मानव जीवन की अत्यन्त उपयोगिता है। पीपल व बड़ हमेषा ऑक्सिजन देते हैं, तुलसी में पारा है, जो वात, पित्त, कफ का नाष करती है और गाय तो अद्भुत कृति है, जिसके हजारों लाभ है। ये सब जीवन उपयोगी, जीवन रक्षक तत्वों से भरे हैं।

इसी प्रकार अनेक पर्व मनाते तो हैं किन्तु उनके प्रदर्षन तक ही सीमित है, उसको मनाने के पीछे क्या दर्षन है, इसे बहुत कम जानते हैं, किन्तु फिर भी मनाते हैं।

यही स्थिति श्राद्ध के संबंध में है, श्राद्ध के साथ तर्पण शब्द भी बोलने में आता है। श्राद्ध और तर्पण प्रत्येक को करना चाहिए इसका समर्थन मैं भी करता हूं, किन्तु कैसे करना चाहिए ये समझें जो प्रचलित मान्यता से भिन्न है।

श्राद्ध से तात्पर्य श्रद्धा से है। श्र में जो (ा) की मात्रा लगी है वह द्ध के आगे लगा देवें तो श्रद्धा हो जावेगी। श्राद्ध करने वालों में मृतक पितरों के प्रति श्रद्धा होती है। कुछ इसे सामाजिक लाज के कारण करते हैं जो श्राद्ध नहीं मात्र औपचारिकता ही है। इसी प्रकार तर्पण का अर्थ है किसी की इच्छा को पूर्ण कर उसे तृप्त करना।

श्रद्धा भाव से जब हम किसी को तृप्त कर देवें तो उसे श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। थोड़ा विचार करें कि जिसके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए, तृप्त करना चाहते है, वह जीवित है या मृत ?

• वस्त्र, भोजन, सेवा, औषधि, धन आदि से तो तृप्त किसी जीवित को ही किया जा सकता है। परन्तु जो शरीर अब नहीं है, जलकर पंचतत्व में विलीन हो गया उसे ये वस्तुओं को कैसे दे सकते हैं ? कैसे उसे तृप्त कर सकते हैं? पुर्नजन्म ले चुकी आत्मा के संबंध में सोचें तो शरीर छोड़कर जो दूसरा शरीर धारण कर चुकी है, अब उस आत्मा का कैसे पता चलेगा कि वह कहां हैं ? कैसे पता चलेगा उसने कौन–सा रूप धारण किया है ? यह भी हो सकता है कि उसको मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। इन परिस्थितियों में हम जिसका तर्पण करना चाहते हैं उस तक कैसे पहुंच पायेगें ? फिर उनके नाम पर दिए जाने वाले पदार्थ, भोजन सामग्री दूसरे उपयोग करते है वह उन तक कैसे पहुंचेगी जिनका कि हमें पता ही नहीं है।

एक बात पर कभी ध्यान नहीं दिया, न कभी किसी ने दिलाया, वह यह कि श्राद्ध करके हम अपने मृतक स्वजन के शरीर को तृप्त करना चाहते हैं या आत्मा को ? भोजन, वस्त्र, पैसा, अन्य वस्तुएं भौतिक हैं जो शरीर के लिए उपयोगी है, आत्मा का इनसे कोई संबंध नहीं। आत्मा का किसी से कोई रिष्ता नहीं, उसके लिए शरीर ग्रहण करना और त्यागना एक सामान्य प्रक्रिया है। अनन्त शरीरों को संयोग उससे होता रहा और जब तक भोग पूरे नहीं होगें तब तक आगे भी होता रहेगा।

हमें तो यह भी नहीं मालूम कि इस शरीर को छोड़ने के पष्चात किस प्रकार के शरीर को (मनुष्य, पषु, पक्षी, जीव जन्तु आदि) धारण किया है।

हमारी धारणा के विपरीत कर्म व्यवस्था के अनुसार उन्हें मानव जन्म न मिलते हुए और कोई प्राणि की योनी प्राप्त हो गई हो।

और उपरोक्त दोनों स्थिति से हटकर उन्हें सद्गति मोक्ष ही प्राप्त हो गया हो। यह सब हमारे सामने अस्पष्ट है।

किन्तु हम अपने मृत पूर्वजों का श्राद्ध व तर्पण उस स्थिति को मानकर ही करते हैं, उसे अभी भी वैसा ही मान रहे हैं जैसे वे जीवित अवस्था में आपके परिवार के साथ थे। क्या यह मान्यता व तर्पण की स्थिति ठीक है ?

जीव की तृप्ती उसकी मनपसन्द इच्छा पूर्ण होने पर होती है। किन्तु जब हमें उनके पुर्नजन्म की कोई जानकारी ही नहीं है तो उनकी इच्छाओं का कैसे पता चलेगा ? फिर दूसरा पहलू यह भी कि भोजन आदि मृतक शरीर को हम नहीं पहुंचा सकते। शरीर में से आत्मा निकल जावे तो मृत शरीर जो शव हो गया उसे एक बून्द पानी नहीं पिला सकते, अन्न का एक कण उसे नही खिला सकते। जो शरीर चिता पर जलकर भस्म हो गया जिसका अस्तित्व संसार में नहीं है, उसे हम कैसे कुछ खिला सकते हैं ? भोजन का महत्व शरीर के लिए है, आत्मा के लिए नहीं। किसी भी भौतिक वस्तु से आत्मा की संतुष्टि नहीं होती।

वास्तव में तर्पण करने पर जब कोई तृप्त हो जावे तो ही तर्पण करना सार्थक है और वह किसी जीवित व्यक्ति का ही हो सकता है। प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में अनेक जीवित माता–पिता (पितर) अभाव का जीवन बिताते देखे जाते हैं। किन्तु उनके न रहने पर वस्तु भेंटकर भोज या श्राद्ध पक्ष में भोजन करवाकर अपने कर्तव्यों का पालन करते देखा है।

आज वृद्धाश्रमों में बढ़ती संख्या इसी बात का प्रमाण है। पति–पत्नि और बच्चों के बीच सिमटते परिवार आज अपने बेटे, बहुओं, पौते, पौतियों से दूर वृद्धाश्रमों की शरण लेते देखे जा सकते हैं। अभाव, उपेक्षा, अकेलेपन में जीवन का अन्तिम समय बिताने वालों के मरने के बाद लोक लाज से या अन्ध परम्परा के कारण उनकी गति परिवार के लोग दूसरों को भोजन, वस्त्र दान करके सुधारते हैं, उनका श्राद्ध व तर्पण पवित्र नदियों में जाकर करते हैं। ऐसा करके वे अपने पूर्वजों के प्रति अपने कर्तव्य की पूर्णता मानते हैं और अपने को उनके कर्ज से मुक्त कर लेते हैं। यह सब अज्ञानता के कारण हो रहा है, जीवित माता पिता की

सेवा उनकी तृप्ति को अनदेखा कर उन्हें दुःख देने के बाद मरने के बाद उन्हें स्वर्ग, मोक्ष के लिए उनकी शान्ति के लिए श्राद्ध व तर्पण करते हैं, यह कहाँ तक उचित है।

सनातन व्यवस्था में अन्तिम संस्कार अन्त्येष्ठि है जीव की मुक्ति, पुर्नजन्म या मोक्ष तो जीव को उसके अपने कर्मों के अनुसार प्राप्त होगा। उसके परिवारजन, मित्र या सहयोगी तो उसके शरीर का अन्तिम संस्कार ठीक प्रकार से घृत व सुगंधित पदार्थों से कर सकते हैं, इसके बाद मृतक का कोई सहयोग किसी प्रकार का नहीं कर सकते। नीतिकार ने लिखा है –

नामुत्र हि सहायार्थं पिता–माता च तिष्ठतः।
ना पुत्र दारा न ज्ञाति धर्मतिष्ठति केवलः।।

मृत्यु के समय न पुत्र साथ जाता है न पत्नि न ही रिस्तेदार केवल धर्म ही साथ जाता है।

यदि मरने के पष्चात मृतक के नाम पर उसे स्वर्ग या मोक्ष दिलाने के लिए पूजा–पाठ–तर्पण–तीर्थ स्नान, पिण्ड दान करके उसे सब दिलाया जा सकता है तो फिर प्रत्येक सम्पन्न व्यक्ति को तो अगला जीवन अच्छे से अच्छा उसके वारिस उसके धन से करा देगें। फिर तो परमात्मा की व्यवस्था निरर्थक हो जावेगी उसके न्याय में बाधा उत्पन्न हो जावेगी। **"अवश्व मेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"** का सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रत्येक जीव को शुभ–अषुभ कर्मों को भोगना ही पड़ता है यह नष्ट हो जावेगा। न्याय करने, कर्म का फल देने का एकमात्र अधिकार परमात्मा का है, वह उससे छिन जावेगा।

इसलिए अन्धविष्वास व गलत परम्परा को छोड़कर श्राद्ध व तर्पण के सही अर्थ को समझें, उसी अनुसार इसे मनाने में इसकी सार्थकता है।

एक और भ्रान्ती है, श्राद्ध जिन पितरों के लिए करने की मान्यता है वहां पितर शब्द जो दिवंगत है सिर्फ उनके लिए ही समझा जा रहा है। किन्तु वास्तव में जिनकी मृत्यु हो चुकी है केवल वे ही पितर माने जाते हैं ऐसा नहीं है।

हमसे बड़े माता–पिता, दादा–दादी जो जीवित हैं सभी पितर की श्रेणी में आते हैं। अर्जुन ने युद्ध न करने के लिए योगीराज कृष्ण को यही कहा था – सामने मेरे बन्धु बान्धव, पितर खड़े हैं इन पर कैसे प्रहार करूं। इसलिए पितर का अर्थ केवल मृतकों से नहीं मानना चाहिए।

कई ग्रंथों में मृतक श्राद्ध व भोजन की निन्दा की गई है।

स्मृतियों ने श्राद्ध भोजन को अच्छा नहीं माना है, उन्होंने श्राद्धी भोजन खाने वालों को दोषी माना है और प्रायष्चित का विधान किया है। आजकल बहुत से विद्वान, ब्राह्मण श्राद्ध भोजन से बचते हैं।

मिताक्षरा (याज्ञवल्क्य स्मृति. 2–286) का कहना है कि भारद्वाज के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन करे तो उसे प्रायष्चित स्वरूप छः प्राणायाम करने चाहिए। यदि वह किसी की मृत्यु के तीन मास से लेकर एक वर्ष के भीतर श्राद्ध भोजन करता है तो उसे एक दिन का उपवास करना चाहिए। इसी प्रकार पृथक–पृथक श्राद्धों में भोजन करने पर चन्द्रायणादि व्रत तक करने का प्रायष्चित निर्धारित किया गया है। वराह पुराण के अनुसार यदि कोई ब्राह्मण श्राद्ध भोजन खाकर उसे पेट में भरे हुए मर जाय तो वह एक कल्प तक भयंकर नरक में रहता है। फिर राक्षस का जन्म पाता है, तब पाप से छुटकारा मिलता है।

इस प्रकार इस विचार से तो श्राद्ध भोजन एक पाप कर्म है और श्राद्ध भोजी ब्राह्मण पापी होता है, यह स्वतः सिद्ध हो गया है।

मृतक श्राद्ध को श्रेष्ठ कर्म नहीं माना – कुछ ऐसे प्रमाण भी पाए जाते हैं जिनमें मृतक श्राद्ध को सत्पुरूषों द्वारा गर्हित एक निन्दित कर्म माना गया है। उदाहरण के लिए महाभारत में राजा निमि का कथानक है जिसका श्रीमान पुत्र मृत्यु को प्राप्त हो गया, निमि ने शोकाकुल होकर स्वपुत्र का श्राद्ध किया और बाद में पष्चाताप करने लगा। यथा –

तत् कृत्वा स मुनि श्रष्ठो धर्म संकरमात्मनः।
पश्चातापेन माता तप्यमानोऽभ्यचिन्त यत्।।
अतम् मुनिभिः पूर्व किम्मयेदमनुष्ठितम्।
कथं नु भाापेन न मां दहेयुर्ब्राह्मणा इति।

– महाभारत अनु. पर्व अ. 91 लोक 16, 17

मृतक श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को नहीं मिलता पुराणों में ऐसे भी प्रमाण मिलते हैं जिससे यह सिद्ध होता है कि मृतक श्राद्ध में दिये गये ब्राह्मण भोजन व पिण्ड आदि का भोजन पितरों को नहीं मिलता। मृतक श्राद्ध समर्थक ब्राह्मणों के इस दावे का कि श्राद्ध में प्रदत्त भोजन पितरों को उनके अगले जन्म में भी मिलता है। खण्ड करने वाली एक कथा भविष्य पुराण में वर्णित है।

कथा – विदर्भ देष में श्येनजीत राजा के राज्य में सुमति नामक ब्राह्मण पत्नि जयश्री के साथ रहता था। जब वे दोनों मरे तो अपने पुत्र के यहां पर ही सुमति बैल बना और उसकी पत्नि कुतिया। सुमति के पुत्र ने जिस दिन अपने माता–पिता का श्राद्ध किया, उसी दिन उसने बैल को खूब मारा और दिनभर भूखा रखा तथा उसकी स्त्री ने कुतिया की कमर तोड़ दी। रात को दोनों (कुतिया और बैल) ने परस्पर वार्तालाप करते हुए कहा – कि इसने व्यर्थ ही श्राद्ध किया, हम तो भूख से तड़प रहे हैं। यह कथा पुराण अ. 78 श्लोक 40, 41 तथा पद्मपुराण उत्तर खण्ड 6 अध्याय 78 में भी आई है।

इसके अतिरिक्त गरूढ़ पुराण में कहा गया है कि उपवास से मरने वाले जहरीले जन्तु के काटने पर हैजे से, आत्म हत्या, गिरने, बांध और पानी में डूबकर मरने वाले, भूचाल, पहाड़ कटने, जंगली जानवरों के द्वारा या बिजली से मरने वाले, दीवार गिरने, खाट पर लेटे हुए मरने वाले, चोर, चाण्डाली के संबंध से मरने वाले, शस्त्र की चोंट से, कुत्ते के काटने से मरने वाले, उपर–नीचे से उच्छिष्ट और विधिहीन मौत मरने वालों को भी श्राद्ध भोजन नहीं मिलता, अतः इनका श्राद्ध नहीं करना चाहिए। जबकि आप जानते हैं अनेक मौतें इसी प्रकार होती हैं, पर आज उनका भी श्राद्ध हो रहा है।

मृतक श्राद्ध और शैयादान – गरूढ़ पुराण प्रेतखण्ड (34–69) पद्य पुराण ने मरने वालों के नाम से शैयादान करने की बड़ी प्रषंसा की है। परन्तु पद्य पुराण में ही इसे एक निन्दित कर्म कहा गया है और शैयादान लेने वाले की निन्दा की गई है। और प्रायष्चित का विधान किया गया है। वहां कहा गया है कि शैयादान वेदों और पुराणों में गर्हित माना गया है और जो लोग इसे लेते हैं वे नरक गामी होते हैं।

गरूढ़ पुराण 2–5–40 से 45 श्लोक तक

लेख में जीवित पितरों के संबंध में उपर बताया गया है। यहॉ इसका तात्पर्य यह नहीं कि मृत पितरों को भूल जावें। वास्तव में मृत पितरों को भी हम सदैव याद रखें, उनके आदर्षों, उनकी अच्छाईयों को याद करते हुए अपने जीवन में उनके सद्‌गुणों, आदर्षों को धारण करने का प्रण करें। उनके प्रति सच्ची श्रद्धा, उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हम व्यक्त कर सकते हैं। इसी भावना से समाज में हजारों प्रतिमा–मूर्तियों का प्रचलन भी हुआ, हमारे जिन पितरों ने अपने यषस्वी जीवन को व्यतीत कर हमारे परिवार को गौरवान्वित किया है, उनका अनुसरण करना, उनके कार्यों को और आगे बढ़ाना ही श्राद्ध होगा, और उनको श्रद्धांजलि होगी, जो प्रत्येक व्यक्ति को करना ही चाहिए।

आम तौर पर मात्र वर्ष में 16 दिन तक पितरों (पूर्वजों) को संतुष्ट करने के समय को ही श्राद्ध पक्ष माना जाता है। इस अवधि में चील–कौओं आदि पक्षियों या अपने उपास्य देवता तथा ब्राह्मणों को भोजन करवाने, दान देने को ही श्राद्ध माना जाता है। इसके द्वारा दिवंगत आत्माओं के प्रति तर्पण कर उन्हें सन्तुष्ट किया गया माना है, किन्तु हमारे सनातन धर्म में ऐसा नित्य करने को पितष्यज्ञ कहा है। यहीं पर विचार करने की आवष्यकता है।

श्राद्ध का अर्थ – **श्रत् सत्यं धार्यते यया सा श्रद्धा।**

श्रद्धयायत, कियते तत् श्राद्धम्।।

जिससे सत्य को धारण किया जावे उसे श्रद्धा कहते हैं और जो कार्य श्रद्धा से किया जावे उसे श्राद्ध कहते हैं।

आचार्य मनु द्वारा मनु स्मृति में दर्षाया है –

कुर्यादहरहः श्राद्धमन्ना द्येनो दकेन वा।

पयो मूल फलैवाऽपि पितृभ्यः प्रीतिमावह्न।

अर्थात् – गृहस्थ प्रतिदिन पितरों (माता–पिता, पितामाह आदि वृद्धजनों को) प्रीतिपूर्वक भोजन, जल, दूध, फल पदार्थ देकर श्राद्ध करे अर्थात् जीवित जनों को तृप्त करना श्राद्ध है। चारों वेदों में मृतक श्राद्ध का कहीं उल्लेख नहीं है।

श्राद्ध का अर्थ यहां होगा **"श्रद्धया पित्‌भ्यः यत् कियते तच्छाद्धम्"** अर्थात् पितरों के लिए किए जाने वाले कर्म हैं उसे श्राद्ध कहते हैं। पितर शब्द

संस्कृत का जो पा धातु से बना है। पित् शब्द का बहुवचन एक से अधिक पिता पितर होता है। पिता कई प्रकार के होते हैं। जन्मदाता व परमपिता परमात्मा के अतिरिक्त भी पिता हैं।

जनिता चोपनेता च यश्च विद्या प्रयत्छति।
अन्नदाता भयत्राता पंचैते पितरः स्मृत।।

– चाणक्य नीति

इसी प्रकार ब्रह्मववर्त में दर्षाया –

अन्नदाता भयत्राता, पत्नी तातस्तभवत,
विद्या दाता पचैते पितरो नृणाम्।।

अर्थात् – जन्म देने वाला, उपनयन संस्कार करवाने वाला, विद्या देने वाला, भय से मुक्ति दिलाने वाला ये पांचों पिता हैं। पत्नि के पिता को भी पिता दर्षाया है।

जो सामर्थ्यहीन क्षीण हो उन्हें भी पितर बताया है **"योअपक्षीयते स पितरः** (षतपथ ब्राह्मण 2–1–3–1) अर्थात् जो क्षीण हों वे पितर कहलाते हैं।

तर्पण – उसी प्रकार तर्पण को भी देखें, जो पितर के लिए हम करते हैं। तर्पण का अर्थ होता है तृप्ति, संतुष्टि।

येन कर्मणा विदषो देवान् ऋविन्।
पितृश्च तर्पयन्ति सुयन्ति तत् तर्पणम्।।

अर्थात् – जिस कर्म के द्वारा विद्वान देव ऋषि और पितरों को सुख युक्त कर तृप्त करते हैं उसे तर्पण कहते हैं।

लेख लिखने की भावना यही है कि हम केवल मृतक पितरों तक ही सीमित, न उनके श्राद्ध को ही अपना धर्म व न मानें, जीवित पितरों को महत्व देकर उन्हें सुखी बनावें।

जीवित माता–पिता, गुरू, आचार्य, विद्वान के प्रति श्रद्धावान होना सत्य श्रद्धा करना, उनको अपने द्वारा सेवा, अन्न, धन से, वस्त्र से तृप्त करना ही सच्चे अर्थों में श्राद्ध है, तर्पण है, और यही श्राद्ध करना चाहिए। तर्पण करना है तो श्राद्ध पक्ष के दिनों में ही क्यों ? हम नित्य करें, हमारे शास्त्रों में यही उल्लेख है।

इस भावना के रहने से ही जीवित माता–पिता व पितरों का परिवार में आदर, सत्कार होगा। वे ही तर्पण के अधिकारी हैं, उनकी तृप्ति कर तर्पण की विचारधारा समाज में व्याप्त हो जावे तो अनेकों परिवार में एक सुखद वातावरण निर्मित होगा इन विचारों को ग्रहण करके ही हम सच्चे रूप में श्राद्ध व तर्पण कर सकेगें।

सुदर्शन चक्रधारी श्रीकृष्ण की सात विशेषताएँ

– दिवंगत मनुदेव "अभय" विद्या वाचस्पति, इन्दौर

सम्प्रति, देश में श्रीकृष्ण के दो प्रमुख स्वरूप और चरित्र प्रचलित हैं एक है–भागवत और प्रेमसागर के अनुसार श्रीकृष्ण रास रचैया, माखन चोर, स्त्रैय तथा बंशी बजैया। श्रीकृष्ण का दूसरा पर्यायवाचक शब्द मुरलीधर है। इस मुरलीधर को परिवार समाज अलग ही प्रकार का है।

श्रीकृष्ण का दूसरा उत्कृष्ट स्वरूप, जैसा कि महाभारत में उल्लेखित है – योगिराज, नीति–निपुण, नारी जाति का सम्मान करने वाला, उनका संवरक्षक तथा कौटुम्बिक कलह की येन–केन टालने वाला, विरोधी पक्षों के पक्षधर नेताओं द्वारा स्तुल्य, शठं शाठ्यत् समाचरेत् का नीति पालक हैं। संकटकाल में अति आवश्यकता पड़ने पर 'सुदर्शन चक्र' चलाकर शत्रु हनन करने में कभी भी भूल न करने वाला महान वीर श्रीकृष्ण।

भारतीय इतिहास के मध्ययुग में भक्ति भाव धारा में श्रीकृष्ण का सूर सागर, भागवत, प्रेम सागर आदि ग्रंथों में विद्वान कवियों तथा भक्तों ने श्रीकृष्ण को अपना आराध्य बनाकर उनके उत्कृष्ट और पावन चरित्र को उनकी गरिमा के विरूद्ध प्रस्तुत कर उनके साथ न्याय नहीं किया। उनके जीवन के साथ कुछ ऐसे भी काल्पनिक कथानक जोड़ दिये गये, जिससे वाचक और श्रोता दोनों को लज्जा आने लगती है। ऐसी कथानकों को आधार बनाकर इतर पंथ, मजहब वाले उनका न मखौल अपितु अपमान तक करने में नहीं चूकते। समीक्षात्मक दृष्टिसे हमारे ही अपनों ने श्रीकृष्ण के संबंध में न्याय नहीं किया।

स्वाध्याय के अन्तर्गत एक वेदमन्त्र पढ़ने का मिला था। स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तामपावमी द्विजानाम्। आयुः प्राणं प्रजां पशुम् कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं दत्वा ब्रजत ब्रह्मलोकम्।। (अथर्ववेद 19/71/1)

इसमें जिन सात गुणों की यथा 1. आयु 2. प्राणम् 3. प्रजाम 4. पशुम 5. कीर्तिं 6. द्रविणम् (धन) तथा 7. ब्रह्मवर्चस (अध्यात्म) आदि गुणों की याचना की है, वे सारे के सारे उदत्त गुण श्रीकृष्ण जी में पाये जाते थे। इनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है :–

1. आयुः – योगिराज श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन प्रायः 125 वर्ष का माना जाता है। उनका संयमित जीवन, गृहस्थ में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, विवाह के पश्चात 12 वर्ष तक संयमित जीवन व्यतीत करने के पश्चात एक ही सन्तान उत्पन्न करना। प्रद्युम्न स्वरूप समान ही लगता था। इस प्रकार श्रीकृष्ण जी के जीवन एक आदर्श गृहस्थ था।

2. प्राणम – इसका सामान्य अर्थ प्राण शक्ति को धारण करने वाले महाप्राण। यह सर्व विदित है कि योग में प्रणेता महर्षि पतंजलि ने योग के आठ

अंगों में यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहर, धारणा, ध्यान समाधि माना है।

संक्षेप में प्राण ही ब्रह्म है अर्थात भगवान है। उपनिषदों में प्राण को ब्रह्म कहा है। प्राण शरीर के कण–कण में व्याप्त है। इस रहस्य को जानकर ही श्रीकृष्ण ने योग की साधना महर्षि सान्दीपण आश्रम, उज्जैन में की थी। इन्हें केवल योगी ही नहीं, अपितु महा योगिराज भी कहा जाता है। वे स्वयं प्रातः सायं ब्रह्मयज्ञ तथा देवयज्ञ करते थे।

3. प्रजा – योगिराज श्रीकृष्ण ने अपने आदर्श ग्रहस्थ जीवन के द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया कि चारों आश्रमों में गृहस्थाश्रम ही अन्य तीन आश्रमों का आश्रय दाता हे। योगिराज का सन्देश है कि गृहस्थ में रहकर मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। हमारे इतिहास में राजा जनक, विश्व श्रवा, पुरूषोत्तम भगवान राम आदि गृहस्थ थे और वे समाज में पूज्य माने जाते हैं। गृहस्थाश्रम एक आदर्श जीवन का नाम है।

4. पशुम – योगिराज श्रीकृष्ण को गोपाल, गोपाल नन्दन आदि इसीलिए कहा जाता है कि सांसारिक जीवन में अनेक पालतु पशुओं का सहयोग लिया जाना चाहिए। इसमें गाय, भैंस, भेड़, ऊँट, घोड़े, कुत्ते आदि बड़े सहायक सिद्ध हो चुके हैं। गाय तो मानो एक चलती फिरती डेरी है। यह मनुष्य को जन्म से मृत्यु पर्यन्त अपने अमृत तुल्य दूध के द्वारा पालन पोषण करती है। बछड़े बछड़ी, बैल आदि देकर कृषि कार्य में अति सहयोग देती है। संसार में गाय ही एक ऐसा पशु है, जिसे समाज में गो माता कहा जाता है। योगिराज श्रीकृष्ण ने गायों का पालन पोषण का समाज के सम्मुख एक महान आदर्श प्रस्तुत किया, जिसकी आज परम आवश्यकता है।

5. कीर्तिम – कहा गया है – य कीर्तिसः जीवात अर्थात जिसकी समाज में कीर्ति, यश, गुणोगान, अच्छाईयों की प्रशंसा हो, वह व्यक्ति मरने के पश्चात भी जीवित रहता है। मर्यादा पुरूषोत्तम राम और योगिराज श्रीकृष्ण, महात्मा भीष्म पितामह युधिष्ठिर आदि कीर्ति के कारण ही आज भी हमारे आराधना के योग्य और पूज्यनीय हैं। योगिराज श्री कृष्ण ने अपने सम्पूर्ण जीवन अनेक ऐसे उत्कृष्ट कार्य किये हैं, जिनके कारण उनका सम्मान और भी बढ़ जाता है। राजसूय यज्ञ में पद पक्षापन का कार्य श्रीकृष्ण ने स्वयं स्वीकार किया था। इतना ही नहीं कौरवों के पक्ष के भीष्म पितामह ने स्वयं श्रीकृष्ण के गणों की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी और उन्हें अर्ध्य का अधिकारी बताया। दुष्टों के दुष्टतम तथा सज्जनों के साथ साधुतापूर्ण व्यवहार करते थे।

6. द्रविणम – द्रविण शब्द का लौकिक संस्कृत में धन अर्थ होता है। जीवन को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए धन की बड़ी आवश्यकता होती है। ध यान रहे, यह धन साधन है, साध्य नहीं।

दुर्योधन के मेवा त्यागे, साग विदुर घट खायो का आदर्श कार्य श्रीकृष्ण ही कर सकते थे। यद्यपि उनका जन्म कारावास में हुआ था, परन्तु अपने पुरूषार्थ,

आत्म विश्वास, दृढ़ इच्छा शक्ति, परामात्मा के प्रति विश्वास और श्रद्धा के कारण वे सर्व साधन सम्पन्न थे। उन्होंने विश्व को धन के संबंध में सन्देश दिया है कि धन का उपयोग त्याग भाव से करो। धन के समुद्र में तैरते रहो, परन्तु मूर्खतावश में उसमें डूबकर मत मरो। यह धन परमात्मा का दिया है। इसे केवल पर हित के लिए उपयोग में लाओ। धन से घृणा मत करो। धन के तीन लक्षण उपार्जन, उपभोग और दान। अन्यथा यही धन तुम्हारे नाश का कारण बन जाएगा। धन प्राप्त होते ही अन्दर और बाहर अनेक शुभ उत्पन्न हो जाते हैं। धन के कारण काम, क्रोध, मोह आदि आनारिक दुर्गुण उत्पन्न हो जाते हैं, तो समाज में धन अपहरण के चारों, डाकू आदि लूटने का आवसर ताकते रहते हैं। धन प्राप्ति में साध्य और साधन दोनों पवित्र होना चाहिए।

7. ब्रह्मवर्चस – अर्थात् परमात्मा की सत्ता को स्वीकार करते हुए उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की याचना करना चाहिए। मनुष्य के जीवन का एकमात्र लक्ष्य दुःख रहित मोक्ष को प्राप्त करना है। इसके लिए आस्तिक जीवन, योगमय जीवन व्यतीत करना अति आवश्यक है। योगिराज श्रीकृष्ण का जीवन उच्चकोटि का था। उनके इस श्रेष्टतम जीवन से हमें यही प्रेरणा मिलती है।

आज इस पवित्र और मंगलमय अवसर पर हमें योगिराज श्री कृष्ण के आदर्श जीवन से उपरोक्त सातों गुणों को धारण करने की प्रेरणा ग्रहण करना चाहिए, हम तभी उनके सच्चे अनुयायी कहलाने के अधिकारी बन सकेगें।

जय योगीराज श्रीकृष्ण की।
जय सुदर्शन चक्रधारी की।।

किसे मान्यता देवें ?

श्रुतिः स्मृतिः पुराणानां विरोधो यत्र दृश्यते।
तत्र श्रोत प्रमाणन्तु तयो द्वैधे स्मृतिर्वरा।।

– व्यास स्मृति

जहां वेद स्मृति और पुराणों में विरोध हो तो वेद का प्रमाण मान्य होगा। स्मृति और पुराण में विरोध हो तो स्मृति को मानना चाहिए।

क्या है जिन्दगी ?

जिन्दगी जनम–जनम की तेरी कमाई है,
न जाने कितने जन्मों के बाद, तूने पाई है।

जिन्दगी निराकार आत्मा और, साकार तत्व का मेल है,
सारी बातों के पीछे, बस चन्द स्वासों का खेल है।

मौत जिन्दगी की वो शाम है,
आने वाली सुबह का पैगाम है।

जिन्दगी तोहफा है किसी का, जरा संभलकर चल।
पता नहीं आए न आए, आने वाला कल।

जिन्दगी वीरान, पतझड़ और खाकजार भी है,
पर इसी में झूमता सावन और बहार भी है।

जिन्दगी जीना एक कला है,
जो न समझे उसके लिए बला है।

मत फूल इस पर कि तू कितना जिया,
सोच ये कि, जीकर तूने क्या किया।

नादान इसे पाकर यूं ही गंवा देते हैं,
पर बुद्धिमान, इस और उस जनम का कमा लेते हैं।

जिन्दगी तो उस प्रभु का वरदान है
समझकर न जीते, इसलिए बदनाम है।

जो जिन्दगी का मकसद समझे बिना ही जीते है,
समझो अमृत छोड़कर, वे जहर ही पीते हैं।

आदमी पतंग और जिन्दगी इसकी डोर है,
हमारे हाथ कुछ नहीं, उड़ाने वाला तो कोई और है।
जिन्दगी जीने का तो "**प्रकाश**" तभी मजा है,
जब हर हाल में समझें, ये उसकी रजा है।

रचना – प्रकाश आर्य, महू

नवीन आर्य समाज की स्थापना

इन्दौर। 14/5/2017 रविवार ग्राम अव. बड़ोदिया में श्री योगेन्द्र जी पटेल के यहां पारिवारिक यज्ञ रखा गया। जिसमें ग्राम के अनेक व्यक्ति सम्मिलित हुए, यज्ञ का सम्पादन श्री बाबूलाल जी सोनी द्वारा किया गया। यज्ञ के उपरान्त मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य, महू की अनुशंसा पर श्री बाबूलाल सोनी जिला प्रभारी सीहोर तथा श्री भारतसिंह जी ठाकुर जिला सहप्रभारी सीहोर जिला द्वारा ग्राम अव. बड़ौदिया में **एक आर्य समाज की स्थापना कर कार्यकारिणी समिति का मनोनयन किया गया, जिसमें सभी सदस्यों ने आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर साप्ताहिक यज्ञ करने का सुसंकल्प लिया गया।** इस कार्यवाही में आर्य समाज के प्रधान श्री मांगीलाल जी ठाकुर तथा ग्राम हरनावदा आर्य समाज के लाखनसिंह जी भाटी तहसील प्रभारी तहसील जावरा जिला सीहोर भी उपस्थित थे।

मेहतवाड़ा आर्य समाज को भूमि व भवन दान वेद सप्ताह एवं श्रावणी पर्व मनाया गया

प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी आर्य समाज मेहतवाड़ा ने ऋषिवर दयानन्द के आव्हान "वेदों की ओर लौटों" को ध्येय मापकर वेद सप्ताह का आयोजन किया। समापन श्रावणी पर्व पूर्णिमा को हुआ। प्रथम दिन के यजमान श्री शिवनारायण जी धर्मपत्नि श्रीमती गीता देवी रहे, दूसरे दिन के यजमान श्री पंकज भावसार रागिनी तीसरे दिन वेदप्रकाश आर्य स्वाति आर्या, चौथे दिन प्रीतमसिंह सीमाबाई, पॉचवें दिन श्री मुकेश कुमार आर्य, प्रतिभा देवी, छठे दिन भी लोकेन्द्र भावसार गीता देवी सातवें दिन के यजमान लोकेन्द्र सिंह आर्य सहपत्निक रहें। **सम्पूर्ण कार्यकम आर्य समाज को दान स्वरूप मिले स्थान पर सम्पन्न हुआ। आर्य समाज में भूमि दानदाता भावसार आर्य परिवार सर्वश्री सुश्री कमलाबाई भावसार मॉ, दिनेश कुमार भावसार, श्री मुकेश कुमार भावसार ने स्वेच्छापूर्वक यह भूमि दान की है,** जिस पर कच्चा निर्माण भी है। वेद सप्ताह मे सभी दिन यज्ञ के पश्चात वैदिक साहित्य का पाठन किया जाता एवं अगले दिवस उसी विषय पर बालकों से प्रश्न उत्तर पूछे जाते हैं। समापन दिवस पर विजेताओं को उत्साहवर्धन हेतु पारितोषित प्रदान किया गया। आर्य समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री सिद्धसिंह आर्य, श्री शिवनारायण आर्य, श्रीमती सिंह आर्य, श्री नरवतसिंह आर्य, श्री दिनेश कुमार, श्री मुकेश कुमार, श्री प्रेमसिंह, अकेसिंह आर्य, मोहनलाल भावसार, दीपक आर्य, विजय राठौर, राजेश शर्मा, धीरजसिंह खिन्नी, रामचन्द्र भावसार, रामसिंह ठाकुर, जगदीश प्रसाद शर्मा, फतहसिंह, हरिसिंहजी, सतीश ठाकुर, लोकेन्द्र भावसार सहित बालक–बालिकाएं प्रतिदिन उपस्थित रहें।

यज्ञ कार्य का सम्पादन श्री आर्य मोहनलाल भावसार ने श्री मुकेश कुमार, लोकेन्द्र कुमार आदि के सहयोग से किया। सभामन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य का भी आगमन हुआ।

इन्दौर नगर में कार्यक्रम

इन्दौर नगर में आर्य समाज मल्हारगंज के द्वारा इन्दौर नगर में कई सार्वजनिक स्थानों पर, मोहल्लों में, बगीचों में वेद प्रचार समाज के प्रधान, श्री डॉ. दक्षदेव गौड़ एवं मन्त्री डॉ. विनोद अहलुवालिया द्वारा आयोजित किया गया। मुख्य रूप से समाज के पुरोहित आचार्य चन्द्रमणिजी के पौरोहित्य और प्रयास से यह सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज दयानन्दगंज द्वारा
श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया।

स्वतन्त्रता दिवस पर एक सरस काव्यपाठ और व्याख्यान का आयोजन सायं 7 से रात्रि 9.30 तक किया गया। राष्ट्र रक्षा में हमारी भूमिका विषय पर नगर के कवि अनिल अंगार, रामचन्द्र अवस्थी एवं वक्ता श्री विकास दवे, आचार्य प्रभामित्र के रूप में पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं उद्‌बोधन सभामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य द्वारा हुआ। जिला संयोजक श्री डॉ. अशोक शर्मा ने संचालन तथा संभागीय उपमन्त्री श्री दक्षदेव गौड़ व आर्य समाज संयोजक श्री दिनेश गुप्ता ने आभार व्यक्त किया।

0 **नगर आर्य समाज श्रद्धानन्द भवन द्वारा श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया। श्री रामेश्वर त्रिवेदी द्वारा संचालन व व्यवस्था की गई।**

श्री दक्षदेव गौड, संभागीय उपमन्त्री

आर्य समाज कोदरिया द्वारा वेद प्रचार

आर्य समाज कोदरिया द्वारा 7 दिवसीय वेद प्रचार यज्ञ, भजन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम यज्ञ, प्रवचन सभा प्रचारक श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री द्वारा तथा भजन प्रस्तुति श्री विनोद आर्य एवं सुरेश आर्य द्वारा की गई। कार्यक्रम में स्थानीय ग्राम वासियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

विष्णुप्रसाद शर्मा, प्रधान

संस्था समाचार

राज्यपाल से भेंट– परोपकारिणी सभाके यशस्वी प्रधान आचार्य धमवीर जी के सत्प्रयासों से पिछले वर्ष राजस्थान के राज्यपाल श्री कल्याण सिंह के द्वारा महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, अजमेर में "दयानन्द पीठ" स्थापित करने की घोषणा हुई थी, किन्तु अभी तक कार्य आरंभ नहीं हुआ था। इसी प्रसंग में बृहस्पतिवार 27 जुलाई 2017 को परोपकारिणी सभा के मंत्री श्री ओममुनि के नेतृत्व में सभा के अधिकारियों और सदस्यों का एक प्रतिनिधि मंडल राज्यपाल से मिलने जयपुर गया। इसमें राजस्थान के लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी जयपुर से तथा सभा के उपप्रधान– श्री रामगोपाल गर्ग, संयुक्त मंत्री– श्री दिनेश शर्मा, कोषाध्यक्ष– श्री सुभाष नवाल, सभासद्– श्रीमती ज्योत्स्ना "धर्मवीर", आर्य समाज अजमेर के मंत्री श्री चन्दराम आर्य अजमेर से सम्मिलित हुए। इस अवसर पर राज्यपाल महामहिम श्री कल्याण सिंह जी की महर्षि दयानन्द कृत वेदभाव्य, सत्यार्थ प्रकाश सहित ऋषि दयानन्द का समग्र साहित्य एवं अन्य वैदिक साहित्य भेंट किया। इस भेंट का प्रभाव यह हुआ कि उसके चार दिन बाद ही महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय का दीक्षान्त समारोह था। इस अवसर परमान्य राज्यपाल भी पधारे और उन्होंने विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ के लिये 1 करोड़ की राशि की घोषणा की। समस्त आर्य जगत् व परोपकारिणी सभा के लिये यह अति हर्ष का विषय है। आर्य जगत् मान्य राज्यपाल जी का धन्यवाद ज्ञापित करता है।

परोपकारी से साभार

आर्य समाज ग्राम हरनावदा में श्रावणी पर्व

आर्य समाज ग्राम हरनावदा जिला सीहोर में श्रावणी पर्व पूरे एक माह तक दिनांक 8 जुलाई से 7 अगस्त रक्षाबन्धन तक पूरे गांव ने यज्ञ एवं सत्संग तथा प्रवचन के माध्यम से मनाया। आर्य समाज हरनावदा में 8 जुलाई से श्री इन्दरसिंह जी विश्वकर्मा के यहां पारिवारिक यज्ञ किया गया। इसके बाद श्री सज्जनसिंह जी भगत जी श्री हिम्मतसिंह जी आर्य, श्री धीरजसिंहजी आर्य, श्री कैलाशनारायण जायसवाल, श्री करणसिंह, श्री भादरसिंहजी, श्री बलवानसिंह जी, श्री चन्दरसिंहजी, श्री बाबूलालजी, श्री मुनीजी (संकल्प), श्री मांगीलालजी, श्री भारतसिंह जी जिला सहप्रभारी, श्री भारतसिंह नेताजी, श्री हरिसिंहजी पड़यार सा, श्री धूलसिंहजी, श्री रामसिंह सेकेट्री सा., श्री भैरूसिंह जी, श्री आजादसिंह जी, श्री हरिसिंहजी, नारायण सिंहजी, श्री मनोहरसिंह जियाजी, श्री कुमेरसिंह भगत जी, श्री अमरसिंह जी, श्री हिम्मतसिंह जी, श्री कुमेरसिंह गड़ी वाले, श्री यशवन्तजी जायसवाल, श्री हिम्मतसिंहजी, श्री इन्दरसिंह जी के यहां पर बारी – बारी से यज्ञ सम्पन्न कराये गये तथा रक्षा बन्धन से एक दिन पूर्व यज्ञ को वृहद रूप दिया गया, जिसमें हमारे मुख्य अतिथि के रूप में मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य रहे। कार्यक्रम में ग्राम हरनावदा आर्य समाज के अलावा आर्य समाज कुरावर, आर्य समाज कजलाश, आर्य समाज करमनखेड़ी, आर्य समाज मेहतवाड़ा, आर्य समाज कामखेड़ा, आर्य समाज नव ज्योति खामखेड़ा, आर्य समाज आष्टा तथा और भी विभिन्न स्थानों से आर्यजनों ने पधारकर कार्यक्रम को विशाल रूप दिया। मन्त्री श्री प्रकाश जी आर्य के उद्‌बोधन को सभी लोगों ने सराहा तथा एक नई ऊर्जा का संचार पैदा किया तथा कार्यक्रम को शान्ति पाठ के साथ सम्पन्न किया गया।

पितृशोक

आर्य समाज खामखेड़ा बैजनाथ के श्री नरेन्द्र जी आर्य, सुमेरसिंह आर्य तथा अनिल आर्य के पूज्य पिताजी श्री देवकरण जी पूर्व सरपंच का दिनांक 17 / 06 / 2017 को देहावसान हो गया। आपकी आयु 77 वर्ष की तथा आप हमेशा आर्य समाज के कार्यों में तत्पर लगे रहते थे।

आप बहुत सेवाभावी तथा मधुरभाषी थे। आपके न रहने से क्षेत्र की जनता में शोक की लहर छा गई।

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्‌देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

– आर्य समाज

प्रान्त में वेद प्रचार की धूम

प्रान्त में श्रावण मास से जन्माष्टमी तक प्रान्त के संभागों में वेद प्रचार बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक श्री सुरेषचन्द शास्त्री तथा भजन प्रस्तुति के लिए सहयोगी सुरेष आर्य, विनोद आर्य इसके अतिरिक्त कुछ स्थानों पर मैं भी उपस्थित रहा। विषेष रूप से आमन्त्रित विद्वान श्री डॉ. कमलनारायण जी शास्त्री, छत्तीसगढ़ तथा स्थानीय विद्वान पं. रामलाल शास्त्री, काषीरामजी अनल, आचार्य प्रभामित्र, आचार्य चन्द्रमणि तथा बाबूलाल सोनी जिला प्रधान सिहोर आदि ने कई स्थानों पर कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

श्री डॉ. कमलनारायण जी शास्त्री के द्वारा इन्दौर, उज्जैन, रतलाम, भोपाल जिले की प्रमुख आर्य समाज में यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर प्रभावषाली प्रवचन दिया, इससे कई लोगों को यज्ञ करने की प्रेरणा मिली।

आर्य समाज नगर भिण्ड के मन्त्री श्रीमान मेहरबानसिंह जी आर्य की पूज्या माता श्रीमती रामदेवी का दिनांक 24/06/2017 को अंत्येष्टि का कार्य श्री केशवमुनि और ब्रह्मचारी सूर्यदेव गुरूकुल, ततारपुर द्वारा समापन हुआ।

आर्य समाज नुनहड़ के श्रीमान मन्त्री बलवीरसिंह के जेष्ठ पुत्र श्री सबलसिंह के पुत्र सूर्यप्रताप का चूडाकर्म संस्कार दिनांक 25/06/2017 को सुबह 9 बजे से दोप. 11 बजे तक श्री आचार्य घनश्याम जी के द्वारा, श्री केशवमुनि व उपप्रधान श्री मानसिंह जी आर्य के यानिध्य में सम्पन्न हुआ, जिसमें उनके सभी संबंधी और ग्राम वासियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया और संस्कारों के बारे में आचार्य जी ने विशेष महत्व बताया।

दिनांक 26/06/2017 से ग्राम महापुर में श्रीमान मेहरबान सिंह के जेष्ठ भ्राता श्री भारतसिंह के आवास पर 10 दिन तक स्वस्तिवाचन–शान्तिकरणम् के मंत्रों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ जिस यज्ञ के ब्रह्म श्री केशवमुनि द्वारा शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

दिनांक 09/07/2017 गुरू पूर्णिमा के अवसर पर आर्य समाज नुनहड़ के मन्त्री श्री बलवीरसिंह के आवास पर यज्ञ सत्संग किया उसके बाद श्री प्रधान बेतालसिंह के आवास पर यज्ञ सत्संग हुआ। उसके बाद शाम 5 बजे ग्राम रमपुरा में करनसिंह के आवास पर यज्ञ सत्संग हुआ।

दिनांक 16/07/2017 को आर्य समाज आर्य नगर महिला मण्डल की भूतपूर्व प्रधाना श्रीमती सीमा आर्या के पूज्य पिता श्री रामप्रकाश आर्य की पुण्य स्मृति में यज्ञ सत्संग हुआ।

दिनांक 18/07/2017 को ग्राम रजपुरा से शुरू नशामुक्ति आन्दोलन में भाग लिया, यह आन्दोलन दिनांक 24/07/2017 को ग्राम अशोखर में विराम हुआ।

दिनांक 30/07/2017 को ग्राम रमपुरा में श्री करनसिंह के आवास पर यज्ञ सत्संग हुआ। इन्दौर संभाग में नगर की विभिन्न आर्य समाज देपालपुर,, गौतमपुरा क्षेत्र में, धार और पष्चिम निमाड़ क्षेत्र में, महू नगर के आसपास ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार प्रसार किया गया।

इसी प्रकार सिहोर जिले के अनेक गॉवों में विषेष कर हरनावदा में 30 दिन का यज्ञ किया गया। 6 अगस्त को उसकी पूर्णहुति हरनावदा में की गई, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

शाजापुर कानड़ क्षेत्र में सभा की ओर से अनेक ग्रामों में सुबह, शाम, दोपहर प्रचार किया गया।

बड़नगर, तथा विक्रमपुर मौलाना में निरन्तर 30 दिन का यज्ञ श्री लक्ष्मीनारायण आर्य और श्री रमेष आर्य के सौजन्य से सम्पन्न हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन म्यांमा

2 से 10 अक्टूबर 2017

वर्ष 2006 से पुनः प्रारंभ हुई अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की श्रृंखला में इस वर्ष दिनांक 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को म्यांमा (बर्मा) में आयोजित किया गया है। इस अवसर पर म्यांमर, रंगून, इनले लेक, मांडले, पहाड़ी स्थान और मेम्यो के आकर्षक स्थानों का भ्रमण भी इच्छुक व्यक्ति कर सकेगें। यात्रा, वीजा, हवाई टिकट, बस व्यवस्था, भोजन, थ्री स्टार होटल आवास। मेडिकल बीमा 75 वर्ष तक की आयु तक कुल अनुमानित व्यय 75000/– रूपये है। (75 वर्ष से अधिक आयु के लिए मेडिकल बीमा पर अतिरिक्त व्यय देय होगा) जो महानुभाव इस सुविधा का लाभ उठाना चाहें वे तुरन्त अपना मूल पासपोर्ट, दो पासपोर्ट फोटो एवं "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा" के नाम पर 15000/– का बैंक ड्राफ्ट/चैक 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली – 110001 के पते पर भेज देवें।

नोट : उपरोक्त यात्रा विवरण एवं व्यय राशि अनुमानित है। विस्तृत कार्यक्रम तैयार होने पर 10 प्रतिशत राशि घट बढ़ सकती है। 10 प्रतिशत से अधिक व्यय राशि बढ़ने पर जो श्रद्धालुजन महासम्मेलन में जाने में असमर्थता प्रकट करेंगे उनके द्वारा अग्रिम भेजी गई राशि को वापस लौटा दिया जाएगा। जो यात्रीगण कोलकाता से यात्रा करेंगे उनके लिए व्यय राशि 7500/– रूपये कम रहेगी।

व्यवस्थापक समिति – श्री अरूणप्रकाश वर्मा, श्री शिवकुमार मदान।

आवश्यक जानकारी हेतु – श्री एस. पी. सिंह (मो. 9540040324) पर सम्पर्क

सुरेशचन्द्र आर्य	**प्रकाश आर्य**	**आर्य अनिल तनेजा**
(प्रधान)	(सम्मेलन संयोजक एवं सभामन्त्री)	(कोषाध्यक्ष)
	मोबा. 9826655117	

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

प्रांतीय सभा से प्रचार हेतु पुस्तकें व स्टीकर प्राप्त करें

वेद परमात्मा का दिया हुआ सृष्टि का प्रथम पवित्र ज्ञान है, जो पूर्ण है सबके लिए है, सदा के लिए है, वही सनातन और धर्म का आधार है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर को मानने से पहले उसे जानना आवश्यक है। ईश्वर वही है जो सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।

॥ ओ३म् ॥

एक सफल, सुखी, श्रेष्ठ जीवन के लिए मात्र भौतिक सम्पदा धन, सम्पत्ति, मकान ही पर्याप्त नहीं है, आत्मिक सम्पदा, जो आत्मा, मन और बुद्धि की पवित्रता व विकास से प्राप्त होती है, वह भी आवश्यक है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्तना चाहिए। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना ■ पढ़ाना और सुनना■सुनाना सब आर्यों (श्रेष्ठ मानवों) का परम धर्म है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

...हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थ से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब जने मिल के प्रीति से करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

सम्प्रदायों, मजहबों की स्थापना का आधार विभिन्न मानवीय विचार धाराएं हैं, इसलिए वे अनेक हैं। किन्तु धर्म उस एक परमात्मा का ज्ञान है, इसलिए सब मनुष्यों का धर्म भी एक है, वही सबको संगठित करता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

ईश्वर एक है, उसके गुण-कर्म और स्वभाव अनेक है, इसलिए हम उसे अनेक नामों से पुकारते हैं। किन्तु उसका मुख्य नाम ओ३म् है, उसी का स्मरण करना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

स्तुति, प्रार्थना, उपासना, पूजा हमारा व्यक्तिगत धर्म है, किन्तु पूर्ण धर्म पालन तो व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और विश्व धर्म के पालन से होता है।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

आर्य समाज

॥ ओ३म् ॥

प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

आर्य समाज

मानव कल्याणार्थ

※ आर्य समाज के दस नियम ※

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

AMIT CHATURVEDI # 98262-71062

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2015–17

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल–462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – प्रकाश आर्य, महू